SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. **SESSION** – 2020-22.

SUBJECT - Learning and Teaching (C-3)

TOPIC NAME – Teacher centric and Subject centric Teaching

DATE - 29/06/2021

Part – I

Unit-III अधिगम और शिक्षण (Learning and Teaching)

शिक्षक केन्द्रित शिक्षण (Teacher Centric Teaching)

शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक जब सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया को अपने नियंत्रण में रखकर विद्यार्थियों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाने का उत्तरदायित्व निभाता है। शिक्षक केन्द्रित शिक्षण कहलाता है।

शिक्षक केन्द्रित शिक्षा के अंतर्गत शिक्षक मुख्य होता है, तथा छात्र गौण होते है। इसके अंतर्गत व्याख्यान एवं प्रदर्शन बिन्दुओं पर सर्वाधिक बल दिया जाता है। साथ-ही-साथ परीक्षा गृहकार्य पर भी विशेष बल दिया जाता है। इस प्रकार शिक्षक केन्द्रित शिक्षा के अन्तर्गत शिक्षक बच्चों के मुल्यांकन के लिए परीक्षा का प्रयोग करते हैं। शिक्षण के लिए व्याख्यान एवं कहानी विधि का प्रयोग करते हैं एवं शिक्षण के दौरान छात्रों में अधिक समझ पैदा करने के लिए प्रदर्शन विधियों का प्रयोग करते हैं।

विषय-केन्द्रित शिक्षण
(Subject-Centric Teaching)

सामान्य रूप से यह देखा जाता है कि किसी विषय की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का स्वरूप विस्तृत रूप में पाया जाता है तथा किसी विषय का संकुचित रूप में पाया जाता है, तथा किसी विषय का स्वरूप एवं उसकी उपयोगिता के कारण उसमें अधिक अनुसंधान भी किये जाते हैं—

उदाहरणस्वरूप विज्ञान एवं गणित विषयों को वर्तमान समय में अधिक महत्व दिया जाता है परिणामस्वरूप इन विषयों के अधिगम में व्यापकता की प्रवृति पायी जाती है तथा जिन विषयों की समाज में उपयोगिता नहीं होती है, उसे अधिक विकसित नहीं किया जाता है।

विषय केन्द्रित अधिगम के निम्नांकित रूप होते हैं—

1. विषय के उद्देश्य
2. विषय का स्वरूप
3. विषय की उपयोगिता
4. विषय की सार्वभौमिकता

(v) विषय सम्बन्धि अनुसंधान

(vi) अधिगम विधियाँ

विषय केन्द्रित उपागम :-

विषय केन्द्रित उपागम में विद्यार्थियों के ग्रहण करने के लिए अध्यापक द्वारा मुख्य रूप से विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण पर ध्यान दिया जाता है।

विषय केन्द्रित उपागम की विशेषतायें :-

⇒ इसमें विषय वस्तु पर ही ध्यान केन्द्रित होता है। अतः कक्षा में पाठ्यपुस्तक का आदान प्रदान ही सभी शिक्षण क्रिया-कलापों का मूल उद्देश्य होता है।

⇒ शिक्षक स्वयं को बच्चों के सम्मुख आदर्श के रूप में प्रस्तुत करता है जैसे कि वह विषय से सम्बन्धित सभी मामलों पर आधिपत्य रखता है।

⇒ इन विद्यार्थियों की अधिगम आवश्यकताओं को पाठ्यपुस्तक के द्वारा ही पुरा हुआ माना जाता है।

⇒ कक्षा में विषय-वस्तु को प्रस्तुत करते समय वास्तविक जीवन की स्थितियों को मुश्किल से ही स्थान दिया जाता है।

⇒ कक्षा की सभी परस्पर क्रियाएँ पाठ्य-पुस्तक केन्द्रित होती है।

⇒ गुणात्मक आधारित परिणाम की अपेक्षा संख्यात्मक आधारित परिणाम का दबाव होता है।

बाल-केन्द्रित शिक्षण
(Learner Centric Teaching)

बालक के मनोविज्ञान को समझते हुए शिक्षण की व्यवस्था करना तथा उसकी अधिगम सम्बन्धि कठिनाइयों को दूर करना बाल-केन्द्रित शिक्षण कहलाता है। अर्थात् बालक की रूचियों प्रवृतियों तथा क्षमताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान करना ही बाल-केन्द्रित शिक्षा कहलाता है। बाल-केन्द्रित शिक्षण में व्यक्तिगत शिक्षण को महत्व दिया जाता है। इसमें बालक का व्यक्तिगत निरीक्षण कर उसकी दैनिक कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। बाल-केन्द्रित शिक्षण में बालक के आधार पर शिक्षण दी जाती है तथा बालक के व्यवहार और व्यक्तित्व में असमानता के लक्षण होने पर बौद्धिक दुर्बलता, समस्यात्मक बालक, रोगी बालक, अपराधी बालक इत्यादि का निदान किया जाता है।